اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ

नमाज़	और क़ाइम करें	किताब से	आप (स) की तरफ़	वहि की गई	जो	आप (स) पढ़ें

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ

सब से बड़ी बात	और अलबत्ता अल्लाह की याद	और बुराई	बेहयाई	से	रोकती है	नमाज़	बेशक

وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ

अहले किताब	और तुम न झगड़ो	45	जो तुम करते हो	जानता है	और अल्लाह

اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا

और तुम कहो	उन (में) से	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	सिवाए	वह बेहतर	मगर उस तरीक़े से जो

اٰمَنَّا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ

एक	और तुम्हारा माबूद	और हमारा माबूद	तुम्हारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	हम ईमान लाए उस पर जो

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِیْنَ

पस जिन लोगों को	किताब	हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ़	और उसी तरह	46	फ़रमांबरदार (जमा)	उस के	और हम

اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ

उस पर	बाज़ ईमान लाते हैं	और इन अहले मक्का से	उस पर	वह ईमान लाते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें

وَمَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इस से क़ब्ल	आप (स) पढ़ते थे	और न	47	काफ़िर (जमा)	मगर (सिर्फ़)	हमारी आयतों का	और वह नहीं इन्कार करते

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

48	हक़ नाशनास	आलबत्ता शक करते	उस (सूरत) में	अपने दाएं हाथ से	और न उसे लिखते थे	कोई किताब

بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا یَجْحَدُ

और नहीं इन्कार करते	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	सीनों में	वाज़ेह आयतें	बल्कि वह

بِاٰیٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ

आप (स) फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियां	उस पर	नाज़िल की गई	क्यों न	और वह बोले	49	ज़ालिम (जमा)	मगर	हमारी आयतों का

اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۵۰﴾ اَوَلَمْ یَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا

कि हम ने नाज़िल की	क्या उन के लिए काफ़ी नहीं	50	साफ़ साफ़	डराने वाला	और इस के सिवा नहीं कि मैं	अल्लाह के पास	निशानियां	इस के सिवा नहीं

عَلَیْكَ الْكِتٰبَ یُتْلٰی عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰی لِقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	और नसीहत	अलबत्ता रहमत है	उस में	बेशक	उन पर	पढ़ी जाती है	किताब	आप (स) पर

ع ٥ / ١

یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ قُلْ كَفٰی بِاللّٰهِ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ شَهِیْدًا ۚ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो	वह जानता है	गवाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	आप (स) फ़रमा दें कि काफ़ी है अल्लाह	51	वह ईमान लाते हैं

وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۵۲﴾

52	वह घाटा पाने वाले	वही हैं	अल्लाह के	और वह मुन्किर हुए	बातिल पर	ईमान लाए	और जो लोग	और ज़मीन में

आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ किताब वहि की गई है, और नमाज़ क़ाइम करें, बेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई और बुराई से, और अलबत्ता अल्लाह की याद सब से बड़ी बात है, और अल्लाह जानता है जो तम करते हो। (45)
और तुम अहले किताब से न झगड़ो मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो, सिवाए उन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, और तुम कहो हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उस के फ़रमांबरदार हैं। (46)
और उसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की, पस जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह ईमान लाते हैं उस पर, और अहले मक्का में से बाज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इन्कार सिर्फ़ काफ़िर करते हैं। (47)
और आप (स) इस (नुज़ूले क़ुरआन) से क़ब्ल कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने दाएं हाथ से उसे लिखते थे। उस सूरत में अलबत्ता हक़ नाशनास शक करते। (48)
बल्कि यह वाज़ेह आयतें उन के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें इल्म दिया गया, और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ ज़ालिम करते हैं। (49)
और वह बोले उस पर उस के रब की तरफ़ से निशानियां (मोजिज़ात) क्यों न नाज़िल की गईं, आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि निशानियां (मोजिज़ात) अल्लाह के पास हैं और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (50)
क्या उन लोगों के लिए काफ़ी नहीं कि हम ने आप (स) पर किताब नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है, बेशक उस में उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत है जो ईमान लाते हैं। (51)
आप (स) फ़रमा दें अल्लाह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, वह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और वह अल्लाह के मुन्किर हुए वही लोग हैं घाटा पाने वाले। (52)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْ لَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ

अज़ाब	तो आ चुका होता उन पर	मुक़र्रर	मीआ़द	और अगर न	अज़ाब की	और वह आप (स) से जल्दी करते हैं

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ

अज़ाब की	आप (स) से जल्दी करते हैं	53	उन्हें ख़बर न होगी	और वह	अचानक	और ज़रूर उन पर आएगा

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	उन्हें ढांप लेगा	(जिस) दिन	54	काफ़िरों को	अलबत्ता घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	तुम करते थे	जो	चखो तुम	और वह कहेगा	उन के पाऊँ	और नीचे से	उन के ऊपर से

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

56	पस तुम इबादत करो	पस मेरी ही	वसीअ़	मेरी ज़मीन	बेशक	जो ईमान लाए	ऐ मेरे बन्दो

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	57	तुम लौटाए जाओगे	फिर हमारी तरफ़	मौत	चखना	हर शख़्स

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

जारी हैं	बाला ख़ाने	जन्नत	से-के	हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	काम करने वाले	(क्या ही) अच्छा अजर है	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे से

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

नहीं उठाते	जानवर जो	और बहुत से	59	वह भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर	जिन लोगों ने सब्र किया

رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	60	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और तुम्हें भी	उन्हें रोज़ी देता है	अल्लाह	अपनी रोज़ी

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	और काम में लगाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	किस ने बनाया	तुम पूछो उन से

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ करता है	अल्लाह	61	वह उलटे फिरे जाते हैं	फिर कहां	अल्लाह	वह ज़रूर कहेंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	62	जानने वाला	हर चीज़ का	बेशक अल्लाह	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा कर दिया	पानी	आस्मान से	उतारा	किस ने	तुम उन से पूछो

مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع ٦ ١٢ ٢

63	वह अ़क़्ल से काम नहीं लेते	उन में अक्सर लोग	लेकिन	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	आप (स) कह दें	अल्लाह	अलबत्ता वह कहेंगे	उस का मरना

और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआ़द न होती मुक़र्रर, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)

और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)

जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अ़ज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआ़ला) कहेगा (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (55)

ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)

हर शख़्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (57)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के बाला ख़ानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)

जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)

और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", फिर वह कहां उलटे फिरे जाते हैं? (61)

अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (62)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

आख़िरत का घर	और बेशक	और कूद	सिवाए खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	और नहीं

وقف لازم

لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ

कश्ती में	वह सवार होते हैं	फिर जब	64	वह जानते होते	काश	ज़िन्दगी	अलबत्ता वही

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ

नागहां (फ़ौरन) वह	ख़ुश्की की तरफ़	वह उन्हें नजात देता है	फिर जब	उस के लिए एतिक़ाद	ख़ालिस रख कर	अल्लाह को पुकारते हैं

يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ

पस अनक़रीब वह	और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं	हम ने उन्हें दिया	वह जो	ताकि नाशुक्री करें	65	शिर्क करने लगते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ

लोग	जबकि उचक लिए जाते हैं	हरम (सरज़मीने मक्का) को अम्न की जगह	कि हम ने बनाया	क्या उन्हों ने नहीं देखा	66	जान लेंगे वह

مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	नाशुक्री करते हैं	और अल्लाह की नेमत की	ईमान लाते हैं	क्या पस बातिल पर	उस के इर्द गिर्द	से

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ

या झुटलाया उस ने	झूट	अल्लाह पर	बान्धा	उस से जिस ने	बड़ा ज़ालिम	और कौन

بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह आया उस के पास	जब	हक़ को

ع ٦ ٣

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	अलबत्ता साथ है नेकोकारों के	और बेशक अल्लाह	अपने रास्ते (जमा)	हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे	हमारी (राह) में	और जिन लोगों ने कोशिश की

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ (٣٠) سُوْرَةُ الرُّوْمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 — (30) सूरतुर रोम — आयात 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद	और वह	क़रीब की ज़मीन	में	2	रोमी	मग़्लूब हो गए	1	अलिफ़ लाम मीम

غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ

अल्लाह ही के लिए हुक्म	चन्द साल (जमा)	में	3	अनक़रीब वह ग़ालिब होंगे	अपने मग़्लूब होने

مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	अहले ईमान	खुश होंगे	और उस दिन	और बाद	पहले

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

5	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	वह मदद देता है	अल्लाह की मदद से

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और बेशक आख़िरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64) फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिक़ाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं। (65) ताकि उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (66) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अम्न की जगह बनाया, जब कि उस के इर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। (67) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक़ उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68) और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और बेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1) रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़्लूब हो गए। (2) और वह अपने मग़्लूब होने के बाद अनक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3) पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से खुश होंगे। (4) वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (5)

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	अपना वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता अल्लाह	अल्लाह का वादा है

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ

से	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	से	ज़ाहिर को	वह जानते हैं	6	नहीं जानते

الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ

पैदा किया अल्लाह	नहीं	अपने जी (दिल) में	वह ग़ौर करते	क्या नहीं	7	ग़ाफ़िल हैं	वह	आख़िरत

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

और एक मुक़र्रर मीआ़द	दुरुस्त तदबीर के साथ	मगर	उन दोनो के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों

وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا

उन्हों ने सैर की	क्या नहीं	8	मुन्किर हैं	अपना रब	मुलाक़ात से	लोगों से	अक्सर	और बेशक

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

उन से पहले	वह लोग जो	अन्जाम	कैसा हुआ	जो वह देखते	ज़मीन में

كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ

ज़ियादा	और उन्हों ने उस को आबाद किया	ज़मीन	और उन्हों ने बोया जोता	ताक़त (में)	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे

مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

कि उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	पस न था	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	इन्हों ने उसे आबाद किया	उस से जो

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ

जिन लोगों ने	अन्जाम	हुआ	फिर	9	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और लेकिन

اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ ع ١٠ ٢

10	उस से मज़ाक़ करते	और थे वह	अल्लाह की आयतों को	कि उन्हों ने झुटलाया	बुरा	बुरे काम किए

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	11	तुम लौटाए जाओगे	फिर उस की तरफ़	फिर वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा	ख़ल्क़त	अल्लाह पहली बार पैदा करता है

تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

उन के लिए	और न होंगे	12	मुजरिम (जमा)	नाउम्मीद रह जाएँगे	बरपा होगी क़ियामत

مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾

13	मुन्किर	अपने शरीकों के	और वह हो जाएंगे	कोई सिफ़ारशी	उन के शरीकों में से

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	14	मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे	उस दिन	क़ाइम होगी क़ियामत	और जिस दिन

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِىْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

15	खुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे	बाग़ में	सो वह	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)

वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ़) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। (7)

क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनो के दरमियान है मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, और एक मुक़र्ररा मीआ़द के लिए, और बेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनिकर हैं। (8)

क्या उन्हों ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह क़ुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्हों ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्हों ने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर ज़ुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (9)

फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)

अल्लाह पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुजरिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)

और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुनकिर हो जाएंगे। (13)

और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तित्तर बित्तर) हो जाएंगे। (14)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए सो वह बाग़े (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और मुलाक़ात को	हमारी आयतों को	और झुटलाया	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

जब	अल्लाह	पस पाकीज़गी (बयान करो)	16	हाज़िर (गिरिफ़्तार) किए जाएंगे	अ़ज़ाब में	पस यही लोग

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	तमाम तारीफ़ें	और उस के लिए	17	तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त)	और जब	तुम शाम करो (शाम के वक़्त)

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَىَّ

ज़िन्दा	वह निकालता है	18	तुम ज़ुहर करते हो (ज़ुहर के वक़्त)	और जब	और बाद ज़वाल (तीसरे पहर)	और ज़मीन

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَيُحْىِ الْاَرْضَ بَعْدَ

बाद	ज़मीन	और वह ज़िन्दा करता है	ज़िन्दा से	मुर्दा	और निकालता है वह	मुर्दा से

ع ٢ ٩ ٥ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

से	उस ने पैदा किया तुम्हें	कि	और उस की निशानियों से	19	तुम निकाले जाओगे	और उसी तरह	उस का मरना

تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	कि	और उस की निशानियों से	20	फैले हुए	आदमी	नागहां तुम	फिर	मिट्टी

لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ

और उस ने किया	उन की तरफ़ (पास)	ताकि तुम सुकून हासिल करो	जोड़े	तुम्हारी जिन्स से	तुम्हारे लिए

بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और मेहरबानी	मुहब्बत	तुम्हारे दरमियान

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ

तुम्हारी ज़बानें	और मुख़्तलिफ़ होना	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	और उस की निशानियों से

وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ

और उस की निशानियों से	22	आ़लिमों (दानिशमन्दों) के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और तुम्हारे रंग

مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ

बेशक	उस के फ़ज़्ल से	और तुम्हारा तलाश करना	और दिन	रात में	तुम्हारा सोना

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ

बिजली	वह दिखाता है तुम्हें	और उस की निशानियों से	23	वह सुनते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْىِ بِهِ الْاَرْضَ

ज़मीन	फिर ज़िन्दा करता है उस से	पानी	आस्मान से	और वह नाज़िल करता है	और उम्मीद के लिए	ख़ौफ़

بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	अ़क़्ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	इस में	बेशक	उस के मरने के बाद

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाक़ात को आख़िरत की, पस यही लोग अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किए जाएंगे। (16)

पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17)

और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और ज़ुहर के वक़्त। (18)

वह मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है, और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह ज़िन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (19)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी जिन्स से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, बेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (21)

और उस की निशानियों में से हैं आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का मुख़्तलिफ़ होना, बेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं। (22)

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी), बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)

और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (24)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

जब वह तुम्हें बुलाएगा	फिर	उस के हुक्म से	और ज़मीन	आस्मान	क़ाइम हैं	कि	और उस की निशानियों से

دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ مَنْ

जो	और उस के लिए	25	निकल आओगे	यकबारगी तुम	ज़मीन से	एक निदा

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا

पहली बार पैदा करता है	और वही है जो	26	फ़रमांबरदार	सब उसी के लिए	और ज़मीन में	आस्मानों में

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى

बुलन्द तर	शान	और उसी के लिए	उस पर	बहुत आसान	और वह (यह)	फिर उस को दोबारा पैदा करेगा	ख़ल्क़त

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ لَكُمْ ع ٣ ٨ ٦

तुम्हारे लिए	उस ने बयान की	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में

مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

तुम्हारे दाएं हाथ (ग़ुलाम)	जो मालिक हुए	से	क्या तुम्हारे लिए	तुम्हारी जानें (हाल)	से	एक मिसाल

مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ

(क्या) तुम उन से डरते हो	बराबर	उस में	सो (ताकि) तुम	जो हम ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	में	कोई शरीक

كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	अक़्ल वालों के लिए	निशानियां	हम खोल कर बयान करते हैं	उसी तरह	अपनी जानें (अपनों से)	जैसे तुम डरते हो

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ

तो कौन हिदायत देगा	इल्म के बग़ैर (बेजाने)	अपनी ख़्वाहिशात	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	पैरवी की	बल्कि

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

अपना चेहरा	पस सीधा रखो तुम	29	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिसे

لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ

उस पर	लोगों को पैदा किया उस ने	जो (जिस)	फ़ित्रत अल्लाह की	यक रुख़ हो कर	दीन के लिए

لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	दीन सीधा	यह	अल्लाह की ख़ल्क़ में	तबदीली नहीं

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا

और क़ाइम रखो तुम	और तुम डरो उस से	उस की तरफ़	रुजूअ़ करने वाले	30	वह जानते नहीं	अक्सर लोग

الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا

टुकड़े टुकड़े कर लिया	जिन्हों ने	(उन में) से	31	शिर्क करने वाले	से	और न हो तुम	नमाज़

دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

32	ख़ुश हैं	उन के पास	उस पर	सब गिरोह	फ़िर्क़े फ़िर्क़े	और हो गए	अपना दीन

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान क़ाइम हैं। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम यकबारगी निकल आओगे। **(25)**

और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। **(26)**

और वही है जो पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(27)**

उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे ग़ुलामों में से) उस रिज़्क़ में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अक़्ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। **(28)**

बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी ख़्वाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं हैं उन के लिए कोई मददगार। **(29)**

पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) यक रुख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्रत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़ल्क़ (बनाई हुई फ़ित्रत) में कोई तबदीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। **(30)**

सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम क़ाइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। **(31)**

उन में से जिन्हों ने अपना दीन टुकड़े टुकड़े कर लिया, फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। सब के सब गिरोह उस पर ख़ुश हैं जो उन के पास है। **(32)**

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ

फिर जब	उस की तरफ़	रुजूअ़ करते हैं	अपने रब को	वह पुकारते हैं	कोई तक्लीफ़	पहुँचती है लोगों को	और जब

اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا

कि नाशुक्री करें	33	शरीक करने लगते हैं	अपने रब के साथ	उन में से	एक गिरोह	नागहां	रहमत	अपनी तरफ़ से	वह उन को चखा देता है

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

कोई सनद	उन पर	क्या हम ने नाज़िल की	34	तुम जान लोगे	फिर अ़नक़रीब	सो फ़ाइदा उठा लो तुम	उस की जो हम ने दिया

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब	35	शरीक करते हैं	उस के साथ	हैं	वह जो	कि वह बतलाती है

فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	मायूस हो जाते हैं	नागहां वह	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	तो वह ख़ुश हों उस से

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ

बेशक	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़	कुशादा करता है	कि अल्लाह	क्या उन्हों ने नहीं देखा

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ

उस का हक़	क़राबत दार	पस दो तुम	37	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	अलबत्ता निशानियां	इस में

وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	उन लोगों के लिए जो	बेहतर	यह	और मुसाफ़िर	और मिसकीन

وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا

ताकि बढ़े	सूद	से	तुम दो	और जो	38	फ़लाह पाने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह की रज़ा

فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

ज़कात	से	और जो तुम दो	अल्लाह के हां	तो नहीं बढ़ता	लोग (जमा)	माल (जमा)	में

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

अल्लाह है जिस ने	39	चन्द दर चन्द करने वाले	वह	तो वही लोग	अल्लाह की रज़ा	चाहते हुए

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

से	क्या	वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	फिर वह तुम्हें मौत देता है	फिर उस ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	पैदा किया तुम्हें

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	कुछ भी	इन (कामों) में से	करे	जो	तुम्हारे शरीक (जमा)

ع ١٣ يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ

कमाया	उस से जो	और दर्या (तरी)	ख़ुश्की में	फ़साद	ज़ाहिर हो गया	40	वह शरीक ठहराते हैं

اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

41	बाज़ आ जाएं वह	शायद वह	उन्हों ने किया (आमाल)	बाज़	ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए	लोगों के हाथ

और जब लोगों को कोई तक्लीफ़
पहुँचती है तो अपने रब को
पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ़
करते हुए, फिर जब वह उन्हें
अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा)
चखा देता है तो नागहां एक गिरोह
(के लोग) उन में से अपने रब के
साथ शरीक करने लगते हैं। (33)
कि वह उसकी नाशुक्री करें जो हम
ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़)
फ़ाइदा उठा लो, फिर अ़नक़रीब (तुम
उसका अन्जाम) जान लोगे। (34)
क्या हम ने उन पर कोई सनद नाज़िल
की? कि वह बतलाती है जो उस के
साथ यह शरीक करते हैं। (35)
और जब हम चखाएं लोगों को
(रहमत का मज़ा) तो उस से ख़ुश
हों, और अगर उन्हें उस के सबब
कोई बुराई पुहँचे जो उन के हाथों
ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो
वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36)
क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह
जिस के लिए चाहता है रिज़्क़
कुशादा करता है (और जिस के
लिए चाहता है) तंग करता है,
बेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन
के लिए इस में निशानियां हैं। (37)
पस तुम क़राबतदारों को उस का
हक़ दो और मोहताज और मुसाफ़िर
को, यह उन के लिए बेहतर है जो
अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और
वही लोग फ़लाह (दो जहानों की
कामयाबी) पाने वाले हैं। (38)
और जो तुम सूद दो कि लोगों के
माल बढ़ें (इज़ाफ़ा हो) तो (यह)
अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और
जो तुम अल्लाह की रज़ा चाहते
हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं
(अपना माल और अजर) चन्द दर
चन्द करने वाले। (39)
अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा
किया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया,
फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर
वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे
शरीकों में से (कोई है) जो उन
कामों मे से कुछ भी करे?
वह पाक है और बरतर उस से जो
वह शरीक ठहराते हैं। (40)
फ़साद ख़ुश्की और तरी में ज़ाहिर
हो गया (फैल गया) उस से जो
कमाया लोगों के हाथों ने (उन के
आमाल के सबब) ताकि वह उन के
बाज़ आमाल का मज़ा उन्हें चखाए,
शायद वह बाज़ आ जाएं। (41)

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर तुम देखो	ज़मीन	में	तुम चलो फिरो	आप (स) फ़रमा दें

مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

अपना चेहरा	पस सीधा रखो	42	शिर्क करने वाले	उन के अक्सर	थे	पहले (थे)

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	अल्लाह से	उस के लिए (जिस को)	टलना नहीं	वह दिन	आ जाए	कि	इस से क़ब्ल	दीने रास्त के लिए (तरफ़)

يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे अ़मल	और जिस ने किए	उस का कुफ़्र	तो उसी पर	जिस ने कुफ़्र किया	43	जुदा जुदा हो जाएंगे

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे वह	44	सामान कर रहे हैं	तो वह अपने लिए

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

और उस की निशानियों से	45	काफ़िर (जमा)	पसंद नहीं करता	बेशक वह	अपना फ़ज़्ल	से

اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِىَ

और ताकि चलें	से (का) अपनी रहमत	और ताकि वह तुम्हें चखाए	खुशखबरी देने वाली	हवाएं	कि वह भेजता है

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	कश्तियां

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ

पस वह उन के पास आए	उन की क़ौमें	तरफ़	बहुत से रसूल	आप (स) से पहले	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا

हक़ (ज़िम्मे)	और है	वह जिन्हों ने जुर्म किया (मुजरिम)	से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	खुली निशानियों के साथ

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	जो भेजता है	अल्लाह	47	मोमिनीन	मदद	हम पर (हमारा)

فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِى السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ

और वह उसे कर देता है	वह चाहता है	जैसे	आस्मान में	फिर वह (बादल) फैलाता है	बादल	तो वह उभारती हैं

كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ

वह उसे पहुँचा देता है	फिर जब	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश की बूंद	फिर तू देखे	टुकड़े टुकड़े

مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا

थे	और अगरचे	48	खुशियां मनाने लगते हैं	अचानक वह	अपने बन्दों	से	जिसे वह चाहता है

مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता मायूस (जमा)	पहले (ही) से	उन पर	कि वह नाज़िल हो	उस से क़ब्ल

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अन्जाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। **(42)**

पस अपना चेहरा दीने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ़) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। **(43)**

जिस ने कुफ़्र किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़्र (का वबाल), और जिस ने अच्छे अ़मल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। **(44)**

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, बेशक अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। **(45)**

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं खुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कश्तियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) और ताकि तुम शुक्र करो। **(46)**

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की क़ौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुजरिमों से इन्तिक़ाम लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनों की मदद करना। **(47)**

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती हैं, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक खुशियां मनाने लगते हैं। **(48)**

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। **(49)**

فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

उस के मरने के बाद	ज़मीन	वह कैसे ज़िन्दा करता है	अल्लाह की रहमत	आसार	तरफ़	पस देख तो

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ

और अगर	50	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	मुर्दे	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला	वही	बेशक

اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ

पस बेशक आप (स)	51	नाशुक्री करने वाले	उस के बाद	ज़रूर हो जाएं	ज़र्द शुदा	फिर वह उसे देखें	हवा	हम भेजें

لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	पीठ दे कर	जब वह फिर जाएं	आवाज़	बहरों	सुना सकते	और नहीं	मुर्दों	नहीं सुना सकते

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ

जो ईमान लाता है	मगर	आप नहीं सुना सकते	उस की गुमराही से	अन्धा	हिदायत देने वाले	और आप (स) नहीं

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ

कमज़ोरी	से (में)	वह जिस ने तुम्हें पैदा किया	अल्लाह	53	फ़रमांबरदार (जमा)	पस वह	हमारी आयतों पर

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ

कुव्वत	बाद	फिर उस ने कर दिया	कुव्वत	कमज़ोरी	बाद	उस ने बनाया-दी	फिर

ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾

54	कुदरत वाला	इल्म वाला	और वह	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ

एक घड़ी से ज़ियादा	वह नहीं रहे	मुजरिम (जमा)	क़सम खाएंगे	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन

كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	और कहा-कहेंगे	55	औन्धे जाते	वह थे	उसी तरह

وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا

पस यह है	जी उठने का दिन	तक	में (मुताबिक़) नविश्ताए इलाही	यक़ीनन तुम रहे हो	और ईमान

يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ

नफ़ा न देगी	पस उस दिन	56	न जानते थे	तुम	और लेकिन	जी उठने का दिन

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं	57	राज़ी करना चाहा जाएगा	और न वह	उन की माज़िरत	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो

لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ

तुम लाओ उन के पास कोई निशानी	और अगर	मिसालें	हर क़िस्म	इस कुरआन	में	लोगों के लिए

لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	झूट बनाते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम नहीं हो	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो ज़रूर कहेंगे

قرأ حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختارة ١٢

ع ١٣ ٥ ٨

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है! बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (50)

और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51)

पस बेशक आप (स) न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52)

आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फ़रमांबरदार हैं। (53)

अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला कुदरत वाला है। (54)

और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी क़सम खाएंगे मुजरिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55)

और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गया: यक़ीनन तुम किताबे ईलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56)

पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़्र ख़्वाही) जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57)

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं लोगों के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ٥٩

59	समझ नहीं रखते	जो लोग	दिल (जमा)	पर	अल्लाह मुहर लगा देता है	उसी तरह

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ٦٠ ع ٦ ٩

60	यक़ीन नहीं रखते	जो लोग	और वह हरगिज़ हलका न पाएं आप को	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप सब्र करें

آيَاتُهَا ٣٤ ❀ سُوْرَةُ لُقْمٰنَ (٣١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 (31) सूरह लुक़मान आयात 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ٢ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ٣

3	नेकोकारों के लिए	और रहमत	हिदायत	2	पुर हिक्मत किताब	आयतें	यह	1	अलिफ़ लाम मीम

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	और वह	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ٤ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥

5	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग	अपने रब से	हिदायत	पर	यही लोग	4	वह यक़ीन रखते हैं

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करे	खेल की (बेहूदा) बातें	ख़रीदता है	जो	लोग	और से

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ٦

6	ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	और वह उसे ठहराते हैं	बे समझे

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ

गोया	उस ने उसे सुना नहीं	गोया	तकब्बुर करते हुए	वह मुँह मोड़ लेता है	हमारी आयतें	पढ़ी जाती हैं उस पर	और जब

فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	बेशक जो लोग	7	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	गिरानी	उस के कानों में

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ٨ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا

सच्चा	अल्लाह का वादा	उस में	हमेशा रहेंगे	8	नेमतों के बाग़ात	उन के लिए	अच्छे

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٩ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى

और उस ने डाले	तुम उन्हें देखते हो	बग़ैर सुतून	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह

فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ

जानवर	हर क़िस्म	उस में	और फैलाए	झुक (न) जाए तुम्हारे साथ	कि	पहाड़ (जमा)	ज़मीन में

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ١٠

10	उम्दा	जोड़े	हर क़िस्म	उस में	फिर हम ने उगाए	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)

आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यक़ीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)

हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)

जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

यही लोग अपने रब (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)

और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब है। (6)

और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तकब्बुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए नेमतों के बाग़ात हैं। (8)

उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)

उस ने सुतून के बग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर क़िस्म के उम्दा जोड़े। (10)

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ

बल्कि	उस के सिवा	वह जो	पैदा किया	क्या	पस तुम मुझे दिखाओ	ख़ल्क़त (बनाया हुआ) अल्लाह का	यह

الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ ع ١٠

तुम शुक्र करो	कि	हिक्मत	लुक़मान	और अलबत्ता हम ने दी	11	खुली गुमराही	में	ज़ालिम (जमा)

لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ

बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	और जिस ने नाशुक्री की	अपने लिए	वह शुक्र करता है	तो इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	शुक्र करता है	और जो	अल्लाह का

حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ ١٢ وقف النبي ﷺ

अल्लाह के साथ	तू न शरीक ठहरा	ऐ मेरे बेटे	उसे नसीहत कर रहा था	और वह	अपने बेटे को	लुक़मान	कहा	और जब	12	तारीफ़ों के साथ

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ

उसे पेट में रखा	उस के माँ बाप के बारे में	इन्सान	और हम ने ताकीद कर दी	13	अलबत्ता ज़ुल्मे अ़ज़ीम	बेशक शिर्क

اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ

और अपने माँ बाप का	कि तू मेरा शुक्र कर	दो साल में	और उस का दूध छुड़ाना	पर कमज़ोरी	कमज़ोरी	उस की माँ

اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾ وَاِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ النصف

तुझे	जिस का नहीं	मेरा	कि तू शरीक ठहराए	पर (की)	वह तेरे साथ कोशिश करें	और अगर	14	लौट कर आना	मेरी तरफ़

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۪ وَّاتَّبِعْ

और तू पैरवी कर	अच्छे तरीक़े से	दुनिया में	और उन के साथ बसर कर	तू उन दोनों का कहा न मान	कोई इल्म	उस का

سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

जो कुछ	सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	मेरी तरफ़	रुजूअ़ करे	जो	रास्ता

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

राई	से (के)	वज़न (बराबर) दाना	अगर हो	बेशक वह	ऐ मेरे बेटे	15	तुम करते थे

فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا

ले आएगा उसे	ज़मीन में	या	आस्मानों में	या	सख़्त पत्थर	में	फिर वह हो

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

और हुक्म दे	क़ाइम कर नमाज़	ऐ मेरे बेटे	16	ख़बरदार	बारीक बीन	बेशक अल्लाह	अल्लाह

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ

जो तुझ पर पहुँचे	पर	और सब्र कर	बुरी बात	से	और रोक तू	अच्छे काम

اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

लोगों से	अपना रुख़्सार	और तू टेढ़ा न कर	17	बड़ी हिम्मत के काम	से	बेशक यह

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

18	खुद पसंद	इतराने वाले	हर किसी	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	इतराता	ज़मीन में	और न चल तू

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया उन्हों ने जो उस के सिवा हैं, बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (11)
और अलबत्ता हम ने दी लुक़मान को हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र करता है तो वह सिर्फ़ अपने (ही भले के) लिए करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के साथ है। (12)
और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे को कहा और वह उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क एक ज़ुल्मे अ़ज़ीम है। (13)
और हम ने इन्सान को ताकीद की उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट में रखा, और दो साल में उस का दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (14)
और अगर वह दोनों तेरे साथ कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म (सनद) नहीं तो उन का कहा न मान, और दुनिया (के मामलात) में उन के साथ अच्छे तरीक़े से बसर कर, और उस के रास्ते की पैरवी कर जो रुजूअ़ करे मेरी तरफ़, फिर तुम्हें मेरी तरफ़ ही लौट कर आना है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15)
ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज़) एक राई के दाने के बराबर (भी) हो, फिर वह किसी सख़्त पत्थर (चटान) में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में, या ज़मीन में (पोशीदा) हो, अल्लाह उसे ले आएगा (हाज़िर कर देगा), बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (16)
ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ाइम कर, और अच्छे कामों का हुक्म दे, और तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर जो (उफ़्ताद) पहुँचे उस पर सब्र कर, बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17)
और तू लोगों से (बात करते हुए) अपना रुख़्सार न टेढ़ा कर, और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी इतराने वाले, खुद पसंद को। (18)

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ

आवाज़ें	सब से नापसंदीदा	बेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त कर	अपनी रफ़्तार में	और मियाना रवी कर

لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا ع ٢ ٨ ١١

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तुम ने नहीं देखा	19	गधा	आवाज़

فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और बाज़	और पोशीदा	ज़ाहिर	अपनी नेमतें	तुम पर (तुम्हें)	और भरपूर दें	ज़मीन में

مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

20	और बग़ैर किताबे रोशन	और बग़ैर हिदायत	इल्म	बग़ैर	अल्लाह (के बारे में)	झगड़ता है	जो

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا

जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह	जो	तुम पैरवी करो	उन से	कहा जाए	और जब

عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

21	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	उन को बुलाता	शैतान	हो	क्या अगर	अपने बाप दादा	उस पर

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

तो बेशक उस ने थामा	नेकोकार	और वह	अल्लाह की तरफ़	अपना चेहरा	झुका दे	और जो

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ

और जो कुफ़्र करे	22	तमाम काम (जमा)	इन्तिहा	और अल्लाह की तरफ़	हल्क़ा मज़बूत

فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	वह करते थे	फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे वह जो	उन का लौटना	हमारी तरफ़	उस का कुफ़्र	तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى

तरफ़	फिर हम उन्हें खींच लाएंगे	थोड़ा	हम उन्हें फ़ाइदा देंगे	23	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला

عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मानों (को)	किस ने पैदा किया	तुम उन से पूछो	और अगर	24	सख़्त	अ़ज़ाब

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا

अल्लाह के लिए जो कुछ	25	जानते नहीं	बल्कि उन के अक्सर	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह"

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّمَا

यह हो कि जो	और अगर	26	तारीफ़ों के क़ाबिल	बेनियाज़	वह	बेशक अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों में

فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	उस की सियाही	और समन्दर	क़लमें	दरख़्त	से-कोई	ज़मीन	में

سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह की बातें	तो भी ख़तम न हों	समन्दर (जमा)	सात

और अपनी रफ़्तार में मियाना रवी (इख़्तियार) कर, और अपनी आवाज़ को पस्त रख, बेशक आवाज़ों में सब से नापसंदीदा आवाज़ गधे की है। (19)

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और उस ने तुम्हें अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें भरपूर दीं, और लोगों में बाज़ (ऐसे हैं) जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बग़ैर इल्म, बग़ैर हिदायत और बग़ैर रोशन किताब के। (20)

और जब उन से कहा जाए, जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम उस की पैरवी करो तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है, क्या (उस सूरत में भी कि) अगर शैतान उन को दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21)

और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और वह नेकोकार हो, तो बेशक उस ने मज़बूत हल्क़ा (दस्त आवेज़) थाम लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही) तमाम कामों की इन्तिहा है। (22)

और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र आप (स) को ग़मगीन न कर दे, उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है, फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो वह करते थे, बेशक अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (23)

हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़। (24)

और अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया? तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह"। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (25)

अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के क़ाबिल। (26)

और अगर यह हो कि ज़मीन में जो भी दरख़्त हैं क़लम बन जाएं और समन्दर उस की सियाही (बन जाएं) और उस के बाद सात समन्दर (और हों) तो भी अल्लाह की बातें ख़तम न हों, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

28	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	जैसे एक शख़्स	मगर	और नहीं तुम्हारा जी उठाना	नहीं तुम सब का पैदा करना

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ

रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	मुक़र्ररा	मुद्दत	तरफ़	चलता रहेगा	हर एक	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ

वह परस्तिश करते हैं	जो-जिस	और यह कि	वही बरहक़	इस लिए कि अल्लाह	यह	29	ख़बरदार	उस से जो कुछ तुम करते हो

ع ٣ ١١ ١٢

مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

कि	क्या तू ने नहीं देखा	30	बड़ाई वाला	बुलन्द मरतबा	वही	और यह कि अल्लाह	बातिल	उस के सिवा

الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ

बेशक	उस की निशानियां	ताकि वह तुम्हें दिखा दे	अल्लाह की नेमतों के साथ	दर्या में	चलती है	कश्ती

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ

साइबानों की तरह	मौज	उन पर छा जाती है	और जब	31	बड़े शुक्र गुज़ार	बड़े सब्र वाले	वास्ते हर	अलबत्ता निशानियां	उस में

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ

ख़ुश्की की तरफ़	उस ने उन्हें बचा लिया	फिर जब	उस के लिए दीन (इबादत)	ख़ालिस कर के	वह अल्लाह को पुकारते हैं

فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

32	नाशुक्रा	अ़हद शिकन	हर	सिवाए	हमारी आयतों का	और इन्कार नहीं करता	मियाना रो	तो उन में कोई

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ

कोई बाप	न काम आएगा	वह दिन	और ख़ौफ़ करो	अपना परवरदिगार	तुम डरो	लोगो	ऐ

عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	कुछ	से (के) बाप	काम आएगा	वह	और न कोई बेटा	अपने बेटे	से-के

حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ

अल्लाह से	और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे	दुनिया की ज़िन्दगी	सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले	सच्चा

الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ

बारिश	और वह नाज़िल करता है	क़ियामत का इल्म	उस के पास	बेशक अल्लाह	33	धोका देने वाला

وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ

कल	वह करेगा	क्या	कोई शख़्स	जानता	और नहीं	(हामिला के) रहम में	जो	और वह जानता है

ع ٤ ١٣

وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌۢ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿٣٤﴾

34	ख़बरदार	इल्म वाला	बेशक अल्लाह	वह मरेगा	ज़मीन	किस	कोई शख़्स	और नहीं जानता

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख़्स (का पैदा करना), बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाख़िल करता है रात को दिन में, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुक़र्ररा (रोज़े क़ियामत) तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है। (29)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परस्तिश करते हैं सब बातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ाई वाला है। (30)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कश्ती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियां दिखा दे, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (31)

और जब मौज उन पर साइबानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लिया तो उन में कोई मियाना रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अ़हद शिकन नाशुक्रे के। (32)

ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का ख़ौफ़ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोका न दे। (33)

बेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही बारिश नाज़िल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रहम में है, और नहीं जानता कोई शख़्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ख़बरदार है। (34)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
इस में कोई शक नहीं कि इस किताब (कुरआन) का नाज़िल करना तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है। (2)
क्या वह कहते हैं कि यह उस ने घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है ताकि तुम उस क़ौम को डराओ जिस के पास कोई डराने वाला नहीं आया तुम से पहले, ताकि वह हिदायत पा लें। (3)
अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है छः (6) दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार किया, तुम्हारे लिए उस के सिवा नहीं कोई मददगार, और न सिफ़ारिश करने वाला, सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (4)
वह हर काम की तदबीर करता है आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह काम) उस की तरफ़ रुजूअ़ करेगा एक दिन में, जिस की मिक़्दार एक हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो तुम शुमार करते हो। (5)
वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, मेहरबान। (6)
वह जिस ने हर शै बहुत खूब बनाई जो उस ने पैदा की और इन्सान की पैदाइश की इब्तिदा मिट्टी से की। (7)
फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी के खुलासे से बनाया। (8)
फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक किया, और उस में फूंकी अपनी (तरफ़ से) अपनी रूह, और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र करते हो। (9)
और उन्हों ने कहा: क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि वह अपने रब की मुलाक़ात से मुन्किर हैं। (10)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ (٣٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (32) सूरतुस सजदा — आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾

2	परवरदिगार तमाम जहानों का	से	इस में	कोई शक नहीं	किताब	नाज़िल करना	1	अलिफ़ लाम मीम

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

उस क़ौम को	ताकि तुम डराओ	तुम्हारा रब	से	हक़	यह	बल्कि	यह उस ने घड़ लिया है	वह कहते हैं	क्या

مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	3	हिदायत पालें	ताकि वह	तुम से पहले	से	डराने वाला	कोई	उन के पास नहीं आया

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों को	पैदा किया	वह जिस ने

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ

और न सिफ़ारिश करने वाला	मददगार	से- कोई	उस के सिवा	तुम्हारे लिए नहीं	अ़र्श पर	उस ने क़रार किया	फिर

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ

फिर	ज़मीन तक	आस्मान	से	तमाम काम	वह तदबीर करता है	4	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते

يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

5	तुम शुमार करते हो	उस से जो	एक हज़ार साल	उस की मिक़्दार	है	एक दिन में	उस की तरफ़	(उस का रिपोर्ट) चढ़ता है

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

बहुत खूब बनाई	वह जिस ने	6	मेहरबान	ग़ालिब	और ज़ाहिर	जानने वाला पोशीदा	वह

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

बनाया	फिर	7	मिट्टी	से	इन्सान	पैदाइश	और इब्तिदा की	जो उस ने पैदा की	हर शै

نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ

से	उस में	और फूंकी	फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया	8	हक़ीर (बेक़द्र) पानी	से	खुलासे से	उस की नस्ल

رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और बनाए	अपनी रूह

تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ

तो - में	क्या हम	ज़मीन में	हम गुम हो जाएंगे	क्या जब	और उन्हों ने कहा	9	तुम शुक्र करते हो

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

10	मुन्किर (जमा)	अपना रब	मुलाक़ात से	वह	बल्कि	नई पैदाइश

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तुम पर	वह जो कि मुक़र्रर किया गया है	मौत का फ़रिश्ता	तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है	फ़रमा दें

ع ١١ / ١٤

تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	अपने सर	झुकाए होंगे	मुजरिम (जमा)	जब	तुम देखो	और अगर	11	लौटाए जाओगे

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

12	यक़ीन करने वाले	बेशक हम	अच्छे अ़मल	हम करेंगे	पस हमें लौटा दे	और हम ने सुन लिया	हम न देख लिया	ऐ हमारे रब

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ

मेरी तरफ़ से	बात	साबित हो चुकी है	और लेकिन	उस की हिदायत	हर शख़्स	हम ज़रूर देते	हम चाहते	और अगर

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا

वह जो	पस चखो तुम	13	इकट्ठे	और इन्सान	जिन्नों	से	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूँगा जहन्नम

نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا

उस का बदला जो	हमेशा का अ़ज़ाब	और चखो तुम	बेशक हम ने तुम्हें भुला दिया	इस	अपने दिन	मुलाक़ात	तुम ने भुला दिया था

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا

वह	याद दिलाई जाती हैं	जब	वह जो	हमारी आयतों पर	ईमान लाते हैं	इस के सिवा नहीं	14	तुम करते थे

السجدة ٩

خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافٰى

अलग रहते हैं	15	तकब्बुर नहीं करते	और वह	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	गिर पड़ते हैं सिज्दे में

جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا

और उस से जो	और उम्मीद	डर	अपना रब	वह पुकारते हैं	ख़्वाबगाहों (बिस्तरों)	से	उन के पहलू

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ

से	उन के लिए	छुपा रखा गया	जो	कोई शख़्स	सो नहीं जानता	16	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

हो	उस के मानिन्द जो	मोमिन	हो	तो क्या जो	17	जो वह करते थे	उस का	जज़ा	आँखों की ठंडक

وقف غفران

فَاسِقًا ۭ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ

तो उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	रहे	18	वह बराबर नहीं होते	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)

جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

नाफ़रमानी की	वह जिन्हों ने	और रहे	19	वह करते थे	उस के (सिले में) जो	मेहमानी	बाग़ात रहने के

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا

उस में	लौटा दिए जाएंगे	उस से	कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	जहन्नम	तो उन का ठिकाना

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तुम चखो	उन्हें	और कहा जाएगा

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और अगर तुम देखो जब मुजरिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अ़मल करेंगे, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (12)

और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख़्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) बात साबित हो चुकी है मेरी तरफ़ से कि मैं अलबत्ता जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा, इकट्ठे जिन्नों और इन्सानों से। (13)

पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाक़ात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)

इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती हैं तो सिज्दे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)

उन के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह ख़र्च करते हैं। (16)

सो कोई शख़्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)

तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)

रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए तो उन के लिए रहने के बाग़ात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)

और रहे वह जिन्हों ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहन्नम है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ

अज़ाब	सिवाए (पहले)	नज़्दीक	अज़ाब	कुछ	और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

उसे नसीहत की गई	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	21	लौट आएं	शायद वह	बड़ा

بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ١١ ١٥

22	इन्तिक़ाम लेने वाले	मुजरिम (जमा)	से	बेशक हम	उस से	उस ने मुँह फेर लिया	फिर	उस के रब की आयात से

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ

शक में	तो तुम न रहो	किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी

مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

23	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे	उस का मिलना	से-मुतअ़ल्लिक़

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ

उन्हों ने सब्र किया	जब	हमारे हुक्म से	वह रहनुमाई करते	इमाम (पेश्वा)	उन से	और हम ने बनाया

وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	वह	तुम्हारा रब	बेशक	24	यक़ीन करते	हमारी आयतों पर	और वह थे

يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

उन के लिए	क्या हिदायत न हुई	25	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन

كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ

उन के घर (जमा)	में	वह चलते हैं	उम्मतें	से	उन से क़ब्ल	हम ने कितनी हलाक कीं

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ

कि हम चलाते हैं	क्या उन्हों ने नहीं देखा	26	तो क्या वह सुनते नहीं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक

الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ

उस से	खाते हैं	फिर हम निकालते हैं उस से खेती	ख़ुश्क	ज़मीन	तरफ़	पानी

أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ الثلثة

कब	और वह कहते हैं	27	देखते नहीं वह	तो क्या	और वह ख़ुद	उन के मवेशी

هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ

नफ़ा न देगा	फ़तह (फ़ैसले) के दिन	फ़रमा दें	28	सच्चे	तुम हो	अगर	फ़तह (फ़ैसला)	यह

الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ

पस मुँह फेर लो	29	मोहलत दिए जाएंगे	वह	और न	उन का ईमान	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ٨ ١٦

	30	मुन्तज़िर हैं	बेशक वह	और तुम इन्तिज़ार करो	उन से

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अ़ज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आख़िरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले, शायद वह लौट आएं। (21)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुज्रीमों से इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेश्वा बनाए, वह हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे, जब उन्हों ने सब्र किया और वह हमारी आयतों पर यक़ीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन के दरमियान फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हक़ीक़त) मोजिबे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़ब्ल कितनी (ही) उम्मतें हलाक कीं, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि हम ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह ख़ुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28)

आप (स) फ़रमा दें, फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

آيَاتُهَا ٧٣ ❀ سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ (٣٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9	(33) सुरतुल अहज़ाब लशकर	आयात 73

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ

और मुनाफ़िक़ों	काफ़िरों	और कहा न मानें	अल्लाह से डरते रहें	ऐ नबी (स)

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۱﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ

आप के रब (की तरफ़) से	आप की तरफ़	जो वहि किया जाता है	और पैरवी करें आप	1	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿۲﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

और काफ़ी है अल्लाह	अल्लाह पर	और भरोसा रखें आप (स)	2	ख़बरदार	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह

وَكِيْلًا ﴿۳﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ

और नहीं बनाया	उस के सीने में	दो दिल	किसी आदमी के लिए	नहीं बनाए अल्लाह ने	3	कार साज़

اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ

तुम्हारे मुँह बोले बेटे	और नहीं बनाया	तुम्हारी माएं	उन से- उन्हें	तुम माँ कह बैठते हो	वह जिन्हें	तुम्हारी बीवियां

اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	फ़रमाता है	और अल्लाह	अपने मुँह (जमा)	तुम्हारा कहना	यह तुम	तुम्हारे बेटे

يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿۴﴾ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के नज़्दीक	ज़ियादा इंसाफ़	यह	उनके बापों की तरफ़	उन्हें पुकारो	4	रास्ता	हिदायत देता है

فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ

और तुम्हारे रफ़ीक़	दीन में (दीनी)	तो वह तुम्हारे भाई	उन के बापों को	तुम न जानते हो	फिर अगर

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ

अपने दिल	जो इरादे से	और लेकिन	उस से	उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी	कोई गुनाह	तुम पर	और नहीं

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵﴾ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

से	मोमिनों के	ज़ियादा (हक़दार)	नबी (स)	5	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

नज़्दीक तर	उन में से बाज़	और क़राबतदार	उन की माएं	और उस की बीवियां	उन की जानें

بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ

मगर यह कि	और मुहाजिरों	मोमिनों	से	अल्लाह की किताब	में	बाज़ (दूसरों) से

تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۶﴾

6	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	हुस्ने सुलूक	अपने दोस्त (जमा)	तरफ़ (साथ)	तुम करो

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1)

और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक अल्लाह उस से बा ख़बर है जो तुम करते हो। (2)

और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3)

अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4)

उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मन्सूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (5)

नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हक़दार हैं और आप (नबी स) की बीवीयां उन (मोमिनों) की माँएं हैं, और क़राबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजिरों की बनिस्बत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ

और इब्राहीम (अ)	और नूह (अ) से	और तुम से	उन का अ़हद	नबियों	से	हम ने लिया	और जब

وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾

7	पुख़्ता	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	और मरयम के बेटे ईसा (अ)	और मूसा (अ)

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ ع ۸ ۱۷

8	दर्दनाक	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उस ने तैयार किया	उन की सच्चाई	से	सच्चे	ताकि वह सवाल करे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ

लशकर (जमा)	जब तुम पर (चढ़) आए	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	याद करो	ईमान वालो	ऐ

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

तुम करते हो	उसे जो	अल्लाह	और है	तुम ने उन्हें न देखा	और लशकर	आँधी	उन पर	हम ने भेजी

بَصِيْرًا ۚ﴿۹﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ

और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर	से	वह तुम पर आए	जब	9	देखने वाला

زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान करते थे	गले	दिल (जमा)	और पहुँच गए	कज हुईं (चुन्धिया गईं) आँखें

الظُّنُوْنَا ؕ﴿۱۰﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۱﴾

11	शदीद	हिलाया जाना	और वह हिलाए गए	मोमिन (जमा)	आज़माए गए	यहां	10	बहुत से गुमान

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا

जो हम से वादा किया	रोग	दिलों में	और वह जिन के	मुनाफ़िक़ (जमा)	कहने लगे	और जब

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ

ऐ यसरिब (मदीने) वालो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब	12	धोका देना	मगर (सिर्फ़)	अल्लाह और उस का रसूल

لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ

नबी से	उन में से	एक गिरोह	और इजाज़त मांगता था	लिहाज़ा तुम लौट चलो	तुम्हारे लिए	कोई जगह नहीं

يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا ع ۱۰ عند المتقدمين ۱۲

मगर (सिर्फ़)	वह नहीं चाहते	ग़ैर महफ़ूज़	हालांकि वह नहीं	ग़ैर महफ़ूज़	हमारे घर	बेशक	वह कहते थे

فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ

फ़साद	उन से चाहा जाए	फिर	उस (मदीने) के अतराफ़	से	उन पर	दाख़िल हो जाएं	और अगर	13	फ़िरार

لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ

अल्लाह	हालांकि वह अ़हद कर चुके थे	14	थोड़ी सी	मगर (सिर्फ़)	उस में	और न देर लगाएंगे	तो वह ज़रूर उसे देंगे

مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾

15	पूछा जाने वाला	अल्लाह का अ़हद	और है	पीठ	फेरेंगे	न	इस से पहले

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अ़हद, और तुम से (भी लिया) और वह नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख़्ता अ़हद लिया। (7)

ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है। (8)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लशकर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लशकर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9)

जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ़) से, और जब आँखें चुन्धिया गईं, और दिल गलों में (कलेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10)

यहां (इस मौक़े पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11)

और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12)

और जब एक गिरोह ने कहा उन में से, ऐ मदीने वालों! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर बेशक ग़ैर महफ़ूज़ हैं, हालांकि वह ग़ैर महफ़ूज़ नहीं हैं, वह तो सिर्फ़ फ़िरार चाहते हैं। (13)

और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसें) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मन्ज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14)

हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अ़हद पूछा जाने वाला है। (15)

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا

और उस सूरत में	क़त्ल	या	मौत से	तुम भागे	अगर	फ़िरार	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा	फ़रमा दें

لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह से	वह जो तुम्हें बचाए	कौन जो	फ़रमा दें	16	थोड़ा	मगर (सिर्फ़)	न फ़ाइदा दिए जाओगे

اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और वह न पाएंगे	मेहरबानी	चाहे तुम से	या	बुराई	वह चाहे तुम से

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ

और कहने वाले	तुम में से	रोकने वाले	अल्लाह	खूब जानता है	17	और न मददगार	कोई दोस्त

لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً

बुख़्ल करते हुए	18	बहुत कम	मगर	लड़ाई	और नहीं आते	हमारी तरफ़	आजाओ	अपने भाइयों से

عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ

घूम रही हैं	तुम्हारी तरफ़	वह देखने लगते हैं	तुम देखोगे उन्हें	ख़ौफ़	फिर जब आए	तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़

اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ

ख़ौफ़	चला जाए	फिर जब	मौत से	उस पर	ग़शी आती है	उस शख़्स की तरह	उन की आँखें

سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا

नहीं ईमान लाए	यह लोग	माल पर	बख़ीली (लालच) करते हुए	तेज़	ज़बानों से	तुम्हें ताने देने लगे

فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ

वह गुमान करते हैं	19	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	उन के अ़मल	तो अकारत कर दिए अल्लाह ने

الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

कि काश वह	वह तमन्ना करें	लशकर	और अगर आएं	नहीं गए हैं	लशकर (जमा)

بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

तुम्हारे दरमियान	हों	और अगर	तुम्हारी ख़बरें	से	पूछते रहते	देहातियों में	बाहर निकले हुए होते

ع ٢ ١٢ ١٨ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

अच्छा बेहतरीन	मिसाल (नमूना)	अल्लाह का रसूल (स)	में	तुम्हारे लिए	अलबत्ता है यक़ीनन	20	बहुत कम	मगर	जंग न करें

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا

और जब	21	कस्रत से	और अल्लाह को याद करता है	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह	उम्मीद रखता है	उस के लिए जो

رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह	जो हम को वादा दिया	यह है	वह कहने लगे	लशकरों को	मोमिनों ने देखा

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

22	और फ़रमांबरदारी	ईमान	मगर	उन का ज़ियादा किया	और न	और उस का रसूल	अल्लाह	और सच कहा था

आप (स) फ़रमा दें: फ़िरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या क़त्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फ़ाइदा दिए जाओगे। (16)

आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17)

अल्लाह खूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18)

तुम्हारा साथ देने में बख़ीली करते हैं, फिर जब ख़ौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख़्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब ख़ौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगें तेज़ ज़बानों से, माल पर बख़ीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अ़मल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19)

वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आएं तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20)

यक़ीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकस्रत याद करता है। (21)

और जब मोमिनों ने लशकरों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरते हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का जज़्बा)। (22)

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ

सो उन में से	उस पर	उन्हों ने अ़हद किया अल्लाह से	जो	उन्हों ने सच कर दिखाया	ऐसे आदमी	मोमिन (जमा)	से (में)

مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝٢٣ لِّيَجْزِيَ

ताकि जज़ा दे	23	कुछ भी तबदीली	और उन्हों ने तबदीली नहीं की	इन्तिज़ार में है	जो	और उन में से	नज़र अपनी	पूरा कर चुका	जो

اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ

या	अगर वह चाहे	मुनाफ़िक़ों	और वह अ़ज़ाब दे	उन की सच्चाई की	सच्चे लोग	अल्लाह

يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٢٤ وَرَدَّ اللّٰهُ

और लौटा दिया अल्लाह ने	24	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ

जंग	मोमिनीन	और काफ़ी है अल्लाह	कोई भलाई	उन्हों ने न पाई	उन के गुस्से में भरे हुऐ	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝٢٥ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	जिन्हों ने उन की मदद की	उन लागों को	और उतार दिया	25	ग़ालिब	तवाना	अल्लाह	और है

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا

एक गिरोह	रुअ़ब	उन के दिल	में	और डाल दिया	उन के क़िल्ए	से

تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝٢٦ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

और उन के घर (जमा)	उन की ज़मीन	और तुम्हें वारिस बना दिया	26	एक गिरोह	और तुम क़ैद करते हो	तुम क़त्ल करते हो

وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝٢٧ ع ٣ ١٩

27	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	अल्लाह	और है	तुम ने वहां क़दम नहीं रखा	और वह ज़मीन	और उन के माल (जमा)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	चाहती हो	तुम हो	अगर	अपनी बीवियों से	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝٢٨

28	अच्छी	रुख़सत करना	और तुम्हें रुख़सत कर दूँ	मैं तुम्हें कुछ देदूँ	तो आओ	और उस की ज़ीनत

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

और आख़िरत का घर	और उस का रसूल	चाहती हो अल्लाह	तुम	और अगर

فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٢٩

29	अजरे अ़ज़ीम	तुम में से	नेकी करने वालियों के लिए	तैयार किया है	पस बेशक अल्लाह

يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ

बढ़ाया जाएगा	खुली	बेहूदगी के साथ	तुम में से	लाए (मुर्तकिब हो)	जो कोई	ऐ नबी की बीवियो

لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	दो चन्द	अ़ज़ाब	उस के लिए

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्हों ने अल्लाह से जो अ़हद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्हों ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23)

(यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब दे या वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (24)

और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्हों ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25)

और अहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुअ़ब डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो और एक गिरोह को क़ैद करते हो। (26)

और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (27)

ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रुख़सत कर दूँ अच्छी तरह रुख़सत। (28)

और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अ़ज़ीम तैयार कर रखा है। (29)

ऐ नबी (स) की बीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहूदगी की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अ़ज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)